E-ISSN No : 2581-6195 | Volume : 9 | Special Issue | Aug 2026

नरेंद्र कोहली के साहित्य में स्त्री–चेतना, सत्ता और नैतिक दायित्वः एक मानवतावादी अध्ययन

शमा रमोला

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, फोनिक्स यूनिवर्सिटी, रुड़की

Access Online

Article DOI:
10.5281/zenodo.22763373

How to Cite:
शमा रमोला (2026), नरेंद्र कोहली के साहित्य में स्त्री–चेतना, सत्ता और नैतिक दायित्वः एक मानवतावादी अध्ययन, International Educational Journal of Science & Engineering (IEJSE),Vol: 9, Special Issue, Aug 2026 53-57

Research Paper

ABSTRACT

यह शोध–पत्र हिंदी साहित्य के प्रमुख उपन्यासकार नरेंद्र कोहली के साहित्य में निहित स्त्री–चेतना, सत्ता–संबंध और नैतिक दायित्व की अवधारणा का मानवीय एवं वैचारिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कोहली के उपन्यासों में स्त्री केवल सामाजिक पीड़िता या प्रतीकात्मक पात्र नहीं है, बल्कि वह एक सजग, विवेकशील और नैतिक चेतना से युक्त मानवीय इकाई के रूप में उभरती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि कोहली की स्त्री सत्ता से टकराव नहीं करती, बल्कि उसे मानवीय, उत्तरदायी और नैतिक बनाने की प्रक्रिया में सहभागी बनती है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कोहली का स्त्री–विमर्श भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों में एक संतुलित, संवादात्मक और नैतिक दृष्टि विकसित करता है, जो पश्चिमी संघर्षात्मक नारीवादी अवधारणाओं से भिन्न है।

KEYWORDS: स्त्री–चेतना, सत्ता, नैतिक दायित्व, नरेंद्र कोहली, भारतीय स्त्री–विमर्श, पौराणिक आख्यान

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श आधुनिक वैचारिक चिंतन की एक सशक्त धारा के रूप में विकसित हुआ है। प्रारंभिक साहित्य में जहाँ स्त्री को त्याग, करुणा और सहनशीलता की प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत किया गया, वहीं आधुनिक साहित्य में वह आत्मबोध, निर्णय–क्षमता और वैचारिक स्वतंत्रता से युक्त एक सक्रिय इकाई के रूप में सामने आती है। इसी वैचारिक प्रवाह में नरेंद्र कोहली का साहित्य एक विशिष्ट स्थान रखता है। नरेंद्र कोहली के उपन्यासों पर किए गए अब तक के आलोचनात्मक अध्ययनों में मुख्य रूप से उनके पौराणिक आख्यानों, ऐतिहासिक चेतना तथा सांस्कृतिक राष्ट्रदृष्टि को प्रमुखता दी गई है। नरेंद्र कोहली जी का का प्रकाशन सबसे पहले 1960 ई– में हुआ। विद्वानों ने प्रायः उनके साहित्य को मूल्यबोध से युक्त तथा आदर्शपरक प्रवृत्ति का माना है। इसके विपरीत, उनके उपन्यासों में निहित स्त्री–चेतना को केंद्र में रखकर किया गया सुव्यवस्थित और व्यापक अध्ययन अपेक्षाकृत न्यून है। कोहली के उपन्यास पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं को आधुनिक चेतना से जोड़ते हुए स्त्री–पात्रों को केवल सहचर भूमिका तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उन्हें नैतिक हस्तक्षेप, विवेकपूर्ण निर्णय और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह शोध–पत्र कोहली के साहित्य में स्त्री–चेतना के इसी मानवीय और वैचारिक स्वरूप का विश्लेषण करता है। अधिकांश समीक्षाओं में स्त्री–पात्रों को नैतिक सहचर या सहायक भूमिकाओं में सीमित कर आँका गया है, जबकि उनकी वैचारिक सक्रियता, निर्णयात्मक सामर्थ्य और सामाजिक हस्तक्षेप पर अपेक्षित गंभीर विमर्श दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रस्तुत शोध इसी अकादमिक रिक्ति को भरने का प्रयास है।

2. पूर्ववर्ती अनुसंधान एवं साहित्यिक समीक्षा

नरेंद्र कोहली के साहित्य पर किए गए अधिकांश आलोचनात्मक अध्ययनों में उनके पौराणिक आख्यानों, ऐतिहासिक चेतना तथा सांस्कृतिक राष्ट्रदृष्टि को प्रमुखता दी गई है। विद्वानों ने उनके साहित्य को मूल्यबोध से युक्त, आदर्शपरक और नैतिक दृष्टि से समृद्ध माना है।

इसके विपरीत, उनके उपन्यासों में निहित स्त्री–चेतना को केंद्र में रखकर किया गया सुव्यवस्थित और व्यापक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित रहा है। अधिकांश समीक्षाओं में स्त्री–पात्रों को सहायक या नैतिक सहचर के रूप में आँका गया है, जबकि उनकी वैचारिक सक्रियता, निर्णयात्मक सामर्थ्य और सामाजिक हस्तक्षेप पर अपेक्षित गंभीर

Copyright© 2026, IEJSE. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

विमर्श कम दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध इसी अकादमिक रिक्ति को भरने का प्रयास है।

3. स्त्री–चेतनारू वैचारिक आधार

स्त्री–चेतना केवल सामाजिक अन्याय के प्रतिकार तक सीमित अवधारणा नहीं है, बल्कि यह स्त्री के आत्मबोध, विवेकपूर्ण निर्णय और समाज में उसकी सक्रिय भागीदारी से संबंधित एक व्यापक अवधारणा है। नरेंद्र कोहली के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री–चेतना–

- संबंधों के विघटन की पक्षधर नहीं है,
- सांस्कृतिक मूल्यों के निषेध पर आधारित नहीं है,
- बल्कि नैतिक संतुलन और विवेकपूर्ण दृष्टि से संचालित है।

कोहली की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग होते हुए भी कर्तव्यबोध से विचलित नहीं होती। वह स्वतंत्रता को निरंकुश स्वेच्छाचार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व से जुड़ी चेतना के रूप में स्वीकार करती है।

4. पौराणिक आख्यानों में स्त्री–चेतना का नवीन पाठ

'महासमर' जैसे पौराणिक उपन्यासों में नरेंद्र कोहली ने स्त्री–पात्रों को पारंपरिक मिथकीय निष्क्रियता से बाहर निकालकर आधुनिक वैचारिक चेतना से संपन्न रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री–चेतना को केवल सामाजिक अन्याय के प्रतिकार के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह स्त्री के आत्मबोध, विवेकपूर्ण निर्णय और समाज में उसकी सक्रिय भागीदारी से संबंधित एक व्यापक अवधारणा है। ये स्त्रियाँ धर्म, नीति, युद्ध और सत्ता जैसे जटिल विषयों पर तर्कपूर्ण विचार व्यक्त करती हैं तथा पुरुष–प्रधान निर्णय–प्रणाली में नैतिक हस्तक्षेप की भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार लेखक पौराणिक कथाओं के माध्यम से स्त्री–चेतना का पुनर्संरचित और समकालीन पाठ प्रस्तुत करते हैं।

5. आंतरिक द्वंद्व और नैतिक सजगता

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्रों का संघर्ष प्रायः बाह्य टकराव की अपेक्षा अंतर्मन में घटित होता है। यह द्वंद्व इच्छा और दायित्व, प्रेम और मर्यादा, सत्ता और नैतिकता के अंतर्संघर्ष से उत्पन्न होता है। कोहली के साहित्य में सत्ता केवल अधिकार या प्रभुत्व का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह नैतिक उत्तरदायित्व की संरचना है। स्त्री सत्ता के समीप रहते हुए उसे मानवीय बनाती है। यह आंतरिक मंथन स्त्री को दुर्बल नहीं बनाता, बल्कि उसे वैचारिक दृष्टि से अधिक सुदृढ़ करता है। यहाँ स्त्री–चेतना का स्वर तीव्र विद्रोहात्मक न होकर गंभीर, संयमित और विचारोत्तेजक है।

6. स्त्री, सत्ता और नैतिक दायित्व

कोहली के उपन्यासों में स्त्री सत्ता के समीप रहते हुए भी उसे भोग–विलास या प्रभुत्व का साधन नहीं बनाती, बल्कि उसके नैतिक नियंत्रण की भूमिका निभाती है। सत्ता उनके लिए अधिकार–प्रदर्शन का माध्यम न होकर उत्तरदायित्व का क्षेत्र है। इस दृष्टि से कोहली का स्त्री–विमर्श पश्चिमी संघर्षात्मक नारीवाद से भिन्न, संतुलनकारी और संवादात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

7. नरेंद्र कोहली का स्त्री–विमर्श और भारतीय संदर्भ

जहाँ पश्चिमी साहित्यकार नारीवादी चिंतन प्रायः टकराव और संरचनात्मक विघटन पर बल देता है, वहीं नरेंद्र कोहली का स्त्री–विमर्श संवाद, संतुलन और सांस्कृतिक पुनर्रचना पर आधारित है। उनकी स्त्री पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करती, बल्कि उनके भीतर रहते हुए आत्मसम्मान, विवेक और नैतिकता की स्थापना करती है। कोहली का साहित्य स्त्री–विमर्श को एक ऐसा वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है, जो संघर्ष के स्थान पर संवाद, विघटन के स्थान पर पुनर्संरचना और विद्रोह के स्थान पर नैतिक परिवर्तन की अवधारणा को केंद्र में रखता है। यह दृष्टि स्त्री–चेतना को केवल वैचारिक नहीं, बल्कि मानवीय और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध बनाती है।

8. आलोचनात्मक विवेचन

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्रों पर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि वे आदर्शवादी हैं और उनमें प्रत्यक्ष प्रतिरोध का अभाव है। किंतु यह आदर्शवाद उनकी वैचारिक दृष्टि का सजग अंग है। उनकी स्त्री भले ही मुखर विद्रोह न करे, किंतु वह निष्क्रिय अथवा असचेत नहीं है। वे स्त्री–चेतना को क्षणिक उग्र प्रतिक्रिया के स्थान पर दीर्घकालिक नैतिक परिवर्तन की प्रक्रिया से जोड़ते हैं।

9. पूर्ववर्ती अनुसंधान एवं साहित्यिक समीक्षा

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों पर किए गए अब तक के आलोचनात्मक अध्ययनों में मुख्य रूप से उनके पौराणिक आख्यानों, ऐतिहासिक चेतना तथा सांस्कृतिक राष्ट्रदृष्टि को प्रमुखता दी गई है। अधिकांश समीक्षाओं में स्त्री–पात्रों को नैतिक सहचर या सहायक भूमिकाओं में सीमित कर आँका गया है, इसके विपरीत, उनके उपन्यासों में निहित स्त्री–चेतना को केंद्र में रखकर किया गया सुव्यवस्थित और व्यापक अध्ययन अपेक्षाकृत न्यून है। विद्वानों ने प्रायः उनके साहित्य को मूल्यबोध से युक्त तथा आदर्शपरक प्रवृत्ति का माना है। जबकि उनकी वैचारिक सक्रियता, निर्णयात्मक सामर्थ्य और सामाजिक हस्तक्षेप पर अपेक्षित गंभीर विमर्श दृष्टिगोचर नहीं होता। प्रस्तुत शोध इसी अकादमिक रिक्ति को भरने का प्रयास है।

10. स्त्री–चेतनारू वैचारिक आधार

स्त्री–चेतना को केवल सामाजिक अन्याय के प्रतिकार के रूप में

नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह स्त्री के आत्मबोध, विवेकपूर्ण निर्णय और समाज में उसकी सक्रिय भागीदारी से संबंधित एक व्यापक अवधारणा है। नरेंद्र कोहली के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री–चेतना–

- संबंधों के विघटन की पक्षधर नहीं है,
- बल्कि नैतिक संतुलन और विवेकपूर्ण दृष्टि से संचालित है।
- सांस्कृतिक मूल्यों के निषेध पर आधारित नहीं है,

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्रों की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग होते हुए भी कर्तव्यबोध से विचलित नहीं होती।

11. पौराणिक आख्यानों में स्त्री–चेतना का नवीन पाठ

'महासमर' जैसे पौराणिक उपन्यासों में को पारंपरिक मिथकीय निष्क्रियता से बाहर निकालकर आधुनिक वैचारिक चेतना से संपन्न रूप में प्रस्तुत किया है। ये स्त्रियाँ धर्म, नीति, युद्ध और सत्ता जैसे जटिल विषयों पर तर्कपूर्ण विचार व्यक्त करती हैं तथा पुरुष–प्रधान निर्णय–प्रणाली में नैतिक हस्तक्षेप की भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार लेखक पौराणिक कथाओं के माध्यम से स्त्री–चेतना का पुनर्संरचित और समकालीन पाठ प्रस्तुत करते हैं।

12. आंतरिक द्वंद्व और नैतिक सजगता

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्रों का संघर्ष प्रायः बाह्य टकराव की अपेक्षा अंतर्मन में घटित होता है। यह द्वंद्व इच्छा और दायित्व, प्रेम और मर्यादा, सत्ता और नैतिकता के अंतर्संघर्ष से उत्पन्न होता है। यह आंतरिक मंथन स्त्री को दुर्बल नहीं बनाता, बल्कि उसे वैचारिक दृष्टि से अधिक सुदृढ़ करता है। यहाँ स्त्री–चेतना का स्वर तीव्र विद्रोहात्मक न होकर गंभीर, संयमित और विचारोत्तेजक है।

13. नरेंद्र कोहली का स्त्री–विमर्श और भारतीय संदर्भ

कोहली का साहित्य भारतीय स्त्री–विमर्श का एक वैकल्पिक, सांस्कृतिक रूप से अनुकूल प्रतिमान प्रस्तुत करता है। जहाँ पश्चिमी नारीवादी चिंतन प्रायः टकराव और संरचनात्मक विघटन पर बल देता है, वहीं नरेंद्र कोहली का स्त्री–विमर्श संवाद, संतुलन और सांस्कृतिक पुनर्रचना पर आधारित है। उनकी स्त्री पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करती, बल्कि उनके भीतर रहते हुए आत्मसम्मान, विवेक और नैतिकता की स्थापना करती है।

14. आलोचनात्मक विवेचन

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्रों पर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि वे आदर्शवादी हैं और उनमें प्रत्यक्ष प्रतिरोध का अभाव है। किंतु यह आदर्शवाद उनकी वैचारिक दृष्टि का सजग अंग है। उनकी स्त्री भले ही मुखर विद्रोह न करे, किंतु वह निष्क्रिय अथवा असचेत नहीं है। वे स्त्री–चेतना को क्षणिक उग्र प्रतिक्रिया के स्थान पर दीर्घकालिक नैतिक परिवर्तन की प्रक्रिया से जोड़ते हैं।

15. स्त्री–विमर्श की अवधारणा

स्त्री–विमर्श आधुनिक साहित्यिक चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक धारा है, जिसका मूल उद्देश्य समाज में स्त्री की स्थिति, पहचान और अधिकारों का पुनर्मूल्यांकन करना है। यह विमर्श समय के साथ अधिक व्यापक और बहुआयामी होता गया है। स्त्री–विमर्श ने साहित्य को यह दृष्टि प्रदान की कि स्त्री को केवल सहनशील, करुण या त्यागमयी पात्र के रूप में न देखकर एक पूर्ण चेतन इकाई के रूप में समझा जाए। हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श का विकास सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा के प्रसार और स्त्री–चेतना के जागरण से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह विमर्श स्त्री के आत्मबोध, वैचारिक स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता को केंद्र में रखता है।

16. हिंदी उपन्यास में स्त्री–चेतना का विकास

प्रारंभिक हिंदी उपन्यासों में स्त्री–पात्र प्रायः आदर्श नारी, त्याग की प्रतिमा के रूप में चित्रित हुई है। आधुनिक हिंदी उपन्यास में स्त्री–चेतना अधिक मुखर, आत्मनिर्णयक्षम और वैचारिक रूप से सजग रूप में सामने आती है। प्रेमचंद जैसे यथार्थवादी लेखकों के यहाँ स्त्री–पात्रों में सामाजिक चेतना का विकास दिखाई देता है, किंतु उनकी संघर्ष–सीमा सामाजिक मर्यादाओं तक ही सीमित रहती है। यह चेतना केवल शोषण के प्रतिकार तक सीमित न रहकर समाज के नैतिक ढाँचे पर प्रश्न उठाती है।

इसी विकासक्रम में नरेंद्र कोहली का साहित्य एक संतुलित और सांस्कृतिक दृष्टि प्रस्तुत करता है।

17. नरेंद्र कोहलीः रचनाकार और वैचारिक पृष्ठभूमि

नरेंद्र कोहली हिंदी साहित्य के उन प्रमुख उपन्यासकारों में हैं, जिन्होंने पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। वे परंपरा को जड़ता नहीं मानते, बल्कि उसे जीवंत संवाद की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। उनका साहित्य मूल्यबोध, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित है। इसी कारण उनके उपन्यासों में स्त्री–पात्र न तो विद्रोही उग्रता की प्रतीक हैं और न ही मौन सहनशीलता की।कोहली की वैचारिक दृष्टि में व्यक्ति और समाज के बीच नैतिक संतुलन का विशेष महत्त्व है।

18. स्त्री और सत्ताः पारंपरिक अवधारणा का पुनर्मूल्यांकन

पारंपरिक सामाजिक एवं साहित्यिक संरचनाओं में सत्ता को प्रायः पुरुष–केंद्रित शक्ति के रूप में देखा गया है, जहाँ स्त्री या तो सत्ता से वंचित रही है अथवा उसकी परिधि में एक मौन सहचरी

के रूप में उपस्थित रही है। नरेंद्र कोहली के उपन्यास इस पारंपरिक अवधारणा का पुनर्मूल्यांकन करते हैं। उनके साहित्य में सत्ता केवल राजनीतिक या प्रशासनिक अधिकार का प्रतीक नहीं है सत्ता को अधिकार, प्रभुत्व और निर्णय–एकाधिकार के रूप में परिभाषित करने की यह प्रवृत्ति स्त्री की भूमिका को सीमित और गौण बनाती रही है। नरेंद्र कोहली के उपन्यास एक नैतिक उत्तरदायित्वपूर्ण संरचना है। इस संरचना में स्त्री की उपस्थिति सत्ता–विरोधी नहीं, बल्कि सत्ता–संवेदनशील बनकर उभरती है।

19. सत्ता के समीप स्त्री की भूमिका

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री सत्ता से पूर्णतः पृथक नहीं रहती। वह राजा, योद्धा, शासक या नीति–निर्माता के समीप रहकर निर्णय–प्रक्रिया को प्रभावित करती है। किंतु यह प्रभाव छल, अधिकार–प्रदर्शन, अथवा सत्ता–हड़पने की आकांक्षा पर आधारित नहीं होता। नरेंद्र कोहली की स्त्री सत्ता को अधिकार–प्रदर्शन का माध्यम नहीं मानती। उसके लिए सत्ता सेवा का क्षेत्र है, दायित्व का मंच है, और आत्मसंयम की परीक्षा है। स्त्री सत्ता के समीप रहते हुए उसके नैतिक आयाम को सक्रिय करती है। इस प्रकार स्त्री सत्ता की आलोचक भी है और उसकी नैतिक संरक्षिका भी। वह सत्ता को स्मरण कराती है कि उसका उद्देश्य केवल विजय या प्रभुत्व नहीं, बल्कि लोक–कल्याण और धर्म–संरक्षण है।

20. नैतिक दायित्वरू स्त्री–चेतना का केंद्रीय तत्व

नरेंद्र कोहली के यहाँ स्त्री–चेतना का मूल केंद्र नैतिक दायित्व है। उनकी स्त्री स्वतंत्रता को निरंकुश स्वेच्छाचार नहीं मानती, बल्कि उत्तरदायित्व से जुड़ी हुई चेतना के रूप में स्वीकार करती है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है, किंतु सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों से विमुख नहीं होती। नरेंद्र कोहली के यहाँ स्त्री–चेतना का मूल केंद्र नैतिक दायित्व है। उनकी स्त्री स्वतंत्रता को निरंकुश स्वेच्छाचार नहीं मानती, बल्कि उत्तरदायित्व से जुड़ी हुई चेतना के रूप में स्वीकार करती है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है, किंतु सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों से विमुख नहीं होती। नैतिक दायित्व की यह चेतना आत्मसंयम, विवेक तथा सामाजिक संवेदनशीलता से संचालित होती है।स्त्री सत्ता के निकट रहते हुए यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय केवल तात्कालिक लाभ के आधार पर न हों, बल्कि उनके दूरगामी सामाजिक परिणामों पर भी विचार किया जाए।

नैतिक दायित्व की यह चेतना आत्मसंयम, विवेक, तथा सामाजिक संवेदनशीलता से संचालित होती है।

स्त्री सत्ता के निकट रहते हुए यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय केवल तात्कालिक लाभ के आधार पर न हों, बल्कि उनके दूरगामी परिणामों पर भी विचार किया जाए।

21. सत्ता का मानवीयकरण और स्त्री की भूमिका

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री सत्ता को मानवीय रूप प्रदान करती है। सत्ता यहाँ कठोर, निर्दयी और अहंकारी रूप में नहीं, बल्कि संवेदनशील और उत्तरदायी रूप में परिवर्तित होती है। यह परिवर्तन स्त्री की नैतिक दृष्टि और करुणा से संभव होता है।

स्त्री सत्ता को यह बोध कराती है कि शक्ति बिना विवेक के विनाशकारी हो सकती है और निर्णय बिना नैतिकता के अन्यायपूर्ण। इस प्रकार स्त्री सत्ता की कठोरता को संतुलित करती है और उसे मानव मूल्यों से जोड़ती है।

22. स्त्री की नैतिक हस्तक्षेप-क्षमता

नरेंद्र कोहली के स्त्री–पात्र निर्णय–प्रक्रिया में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से नैतिक हस्तक्षेप करते हैं। यह हस्तक्षेप आक्रामक नहीं, बल्कि विचारोत्तेजक होता है। वे युद्ध के औचित्य पर प्रश्न उठाती हैं, सत्ता के दुरुपयोग का विरोध करती हैं और धर्म तथा नीति के संतुलन की पक्षधर होती हैं। स्त्री का स्वर यहाँ सत्ता को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करता है।

23. स्त्री, सत्ता और भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि

स्त्री और सत्ताः पारंपरिक अवधारणा का पुनर्मूल्यांकन

पारंपरिक सामाजिक एवं साहित्यिक संरचनाओं में सत्ता को प्रायः पुरुष–केंद्रित शक्ति के रूप में देखा गया है, जहाँ स्त्री या तो सत्ता से वंचित रही है अथवा उसकी परिधि में एक मौन सहचरी के रूप में उपस्थित रही है। उनके साहित्य में सत्ता केवल राजनीतिक या प्रशासनिक अधिकार का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह एक नैतिक उत्तरदायित्वपूर्ण संरचना है।सत्ता को अधिकार, प्रभुत्व और निर्णय–एकाधिकार के रूप में परिभाषित करने की यह प्रवृत्ति स्त्री की भूमिका को सीमित और गौण बनाती रही है। नरेंद्र कोहली के उपन्यास इस पारंपरिक अवधारणा का पुनर्मूल्यांकन करते हैं। इस संरचना में स्त्री की उपस्थिति सत्ता–विरोधी नहीं, बल्कि सत्ता–संवेदनशील बनकर उभरती है।

24. सत्ता के समीप स्त्री की भूमिका

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री सत्ता से पूर्णतः पृथक नहीं रहती। वह राजा, योद्धा, शासक या नीति–निर्माता के समीप रहकर निर्णय–प्रक्रिया को प्रभावित करती है। किंतु यह प्रभाव छल, अधिकार–प्रदर्शन, अथवा सत्ता–हड़पने की आकांक्षा पर आधारित नहीं होता।

स्त्री सत्ता के समीप रहते हुए उसके नैतिक आयाम को सक्रिय करती है। वह सत्ता को स्मरण कराती है कि उसका उद्देश्य केवल विजय या प्रभुत्व नहीं, बल्कि लोक–कल्याण और धर्म–संरक्षण है। इस प्रकार स्त्री सत्ता की आलोचक भी है और उसकी नैतिक संरक्षिका भी।

नैतिक दायित्वः स्त्री–चेतना का केंद्रीय तत्व

नरेंद्र कोहली के यहाँ स्त्री–चेतना का मूल केंद्र नैतिक दायित्व है। उनकी स्त्री स्वतंत्रता को निरंकुश स्वेच्छाचार नहीं मानती, बल्कि उत्तरदायित्व से जुड़ी हुई चेतना के रूप में स्वीकार करती है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है, किंतु सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों से विमुख नहीं होती। नैतिक दायित्व की यह चेतना आत्मसंयम, विवेक तथा सामाजिक संवेदनशीलता से संचालित होती है।स्त्री सत्ता के निकट रहते हुए यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय केवल तात्कालिक लाभ के आधार पर न हों, बल्कि उनके दूरगामी सामाजिक परिणामों पर भी विचार किया जाए।

सत्ता का मानवीयकरण और स्त्री की भूमिका

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री सत्ता को मानवीय रूप प्रदान करती है। सत्ता यहाँ कठोर, निर्दयी और अहंकारी रूप में नहीं, बल्कि संवेदनशील और उत्तरदायी रूप में परिवर्तित होती है। यह परिवर्तन स्त्री की नैतिक दृष्टि और करुणा से संभव होता है।

स्त्री सत्ता को यह बोध कराती है कि–

- शक्ति बिना विवेक के विनाशकारी हो सकती है,
- और निर्णय बिना नैतिकता के अन्यायपूर्ण।

इस प्रकार स्त्री सत्ता की कठोरता को संतुलित करती है और उसे मानव–मूल्यों से जोड़ती है।

सत्ता और स्त्रीः अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व

नरेंद्र कोहली की स्त्री सत्ता को अधिकार–प्रदर्शन का माध्यम नहीं मानती। उसके लिए सत्ता सेवा का क्षेत्र है, दायित्व का मंच है और आत्मसंयम की परीक्षा है।

यह दृष्टि पश्चिमी नारीवादी सत्ता–अवधारणा से भिन्न है, जहाँ सत्ता–प्राप्ति को प्रायः संघर्ष और प्रतिस्पर्धा से जोड़ा जाता है। कोहली की स्त्री सत्ता में प्रवेश कर उसे बदलने का प्रयास करती है, न कि उसे ध्वस्त करने का।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण

कुछ आलोचकों का मत है कि कोहली के स्त्री–पात्र सत्ता के प्रति अधिक सहिष्णु हैं और उनमें प्रत्यक्ष प्रतिरोध का अभाव है। किंतु यह आलोचना स्त्री–चेतना के उस स्वर को अनदेखा करती है, जो संयम, विवेक और दीर्घकालिक परिवर्तन में विश्वास रखता है।

कोहली की स्त्री सत्ता से संघर्ष नहीं करती, बल्कि सत्ता के अंतःकरण को बदलने का प्रयास करती है। यह परिवर्तन शोर से नहीं, नैतिक दबाव से उत्पन्न होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री, सत्ता और नैतिक दायित्व के मध्य एक गहन और संतुलित संबंध स्थापित होता है। स्त्री सत्ता की विरोधी नहीं, बल्कि उसकी नैतिक चेतना है। वह सत्ता को मानवीय, उत्तरदायी और धर्मसम्मत बनाने में निर्णायक भूमिका निभाती है। इस दृष्टि से कोहली का साहित्य स्त्री–विमर्श को एक वैकल्पिक, सांस्कृतिक और नैतिक आयाम प्रदान करता है।

भारतीय परंपरा में स्त्री को केवल शक्ति (शक्ति–तत्त्व) ही नहीं, बल्कि धर्म और मर्यादा की संवाहक भी माना गया है। नरेंद्र कोहली की स्त्री–दृष्टि इसी सांस्कृतिक आधार से जुड़ी हुई है। उनकी स्त्री सत्ता को धर्म से जोड़ती है, मर्यादा में बाँधती है, और नैतिक अनुशासन प्रदान करती है। इस प्रकार स्त्री सत्ता की नैतिक दिशा निर्देशक बनती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोहली, न. (1988). 'महासमर' (खंड 1द्5). नई दिल्लीः राजपाल एंड संस.
2. कोहली, न. (1996). 'रामकथा'. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन.
3. कोहली, न. (2001). 'अहल्या'. नई दिल्लीः राजपाल एंड संस.
4. कोहली, न. (2004). 'शबरी'. नई दिल्लीः राजपाल एंड संस.
5. कोहली, न. (2009). 'तोड़ो कारा तोड़ो'. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन.
6. मिश्र, न. (2012). 'हिंदी उपन्यास में स्त्री–विमर्श'. नई दिल्लीः साहित्य अकादमी.
7. शर्मा, र. (2010). 'भारतीय नारी चेतना और साहित्य'. वाराणसीः ज्ञानमंडल प्रकाशन.
8. पाण्डेय, प. (2015). स्त्री–चेतना की वैचारिक अवधारणा. 'हिंदी साहित्य शोध पत्रिका', 12(2), 45–5
9. वर्मा, स. (2018). आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श. 'समकालीन साहित्य', 34(1), 21–35.
10. चक्रवर्ती, उ. (2003). 'जेंडरिंग कास्टः ए फेमिनिस्ट दृष्टिकोण'. कलकत्ताः स्त्री पब्लिकेशंस.
11. बटलर, ज. (1990). 'जेंडर ट्रबलः नारीवाद और पहचान का विघटन'. न्यूयॉर्कः रूटलेज.
12. द बोउवार, सि. (1949). 'द सेकेंड सेक्स'. पेरिसरू गैलिमार्ड.